भजन

तर्ज–पीतल की मोरी गागरी

सदगुरू की बड़ी मेहरबानी, हमसे पहचानी न गई है
उनकी वाणी जगाने है आयी,हमने सुनने की कोशिश ना की

1–खेल में जाके तुम भूल जाओगी,मैं जगाऊंगा फिर भी न जगोगी
अपना वायदा वो निभा रहे हैं,हमको मिलने की फुरसत नही है

2–हमने समझा कि ऐसा न होगा,क्या कभी हमसे ऐसा भी होगा
अपने प्रीतम जगाने है आये,बात सुनने की आदत नही है

3–उनके पा के गुण गा सकूं ना,शर्म से सर उठा मैं सकूं ना
उनके एहसान है हमपे इतने,सोचने की भी हिम्मत नही है